

---

# Vishnuproktam Shivarchanopadesham 1

---

## विष्णुप्रोक्तं शिवार्चनोपदेशम् १

---

### Document Information



---

Text title : Vishnuproktam Shivarchanopadesham 1

File name : viShNuproktaMshivArchanopadesham1.itx

Category : shiva, shivarahasya, upadesha, advice

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 20 | 47-58.1||

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 16, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



विष्णुप्रोक्तं शिवार्चनोपदेशम् १



(शिवरहस्यान्तर्गते उग्राख्ये)

- ब्रह्माविष्णुसंवादे -

शिवपूजां विना नान्यद्विहितं मोक्षकारणम् ।

धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनं शिवपूजनम् ॥ ४७ ॥

यः शं करोति सर्वेषां स्मृतः सम्पूजितः प्रभुः ।

स शङ्करः पूजनीयो नियमेनान्वहं मुदा ॥ ४८ ॥

य शिवो मङ्गलाजानिः विधत्ते मङ्गलं नृणाम् ।

स एव शङ्करस्तस्मात्तस्यैवाभ्यर्चनं वरम् ॥ ४९ ॥

शङ्करं योऽर्चयेन्नित्यं त्रिकालं सर्वसाधनैः ।

शङ्करः शं करोत्येव प्रीतस्तन्नियमात्प्रभुः ॥ ५० ॥

संसारसागरं तर्तुं तरिर्नामैव शाङ्करम् ।

नान्यनाम तथाऽसारघोरसंसारतारकम् ॥ ५१ ॥

शाङ्करं नाम विमलमिष्टार्थफलदं विधे ।

तन्नाम मुक्तिदं भव्यं संसारभयनाशकम् ॥ ५२ ॥

शङ्करस्मरणं नित्यं तथा शङ्करपूजनम् ।

इहामुत्रार्थलाभाय कर्तव्यं नित्यकर्मवत् ॥ ५३ ॥

तत्त्यागे तु भवत्येव प्रवेशो निरये नृणाम् ।

कृताद्येषु च सर्वेषु युगेषु भवमुक्तये ॥ ५४ ॥

पूजनीयो महादेवो ब्राह्मणैश्च सुरासुरैः ।

हरः स्मरहरो ब्रह्मन्धोरसंसारतारकः ॥ ५५ ॥

हृतः स्मरो महेशेन स संसारप्रवर्तकः ।

परं त्वव्यभिचारेण भक्तिः कार्या महेश्वरे ॥ ५६ ॥

सा नाशयति संसारं भक्तिरव्यभिचारिणी ।

यथा पतिव्रता शुद्धा नान्यं कामयते तथा ॥ ५७॥

शाङ्करः शङ्करादन्यं नार्चयत्येव सर्वथा । ५८.१

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते विष्णुप्रोक्तं शिवार्चनोपदेशं १ सम्पूर्णम् ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः २०। ४७-५८.१॥


- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 20 . 47-58.1..

Notes:


Viṣṇu विष्णु gives Upadeśa उपदेश to Brahmā ब्रह्मा about several merits of worshipping Śiva शिव, especially Mokṣa मोक्ष.

Proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Vishnuproktam Shivarchanopadesham 1*

pdf was typeset on June 16, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

